P. R. No.: DL(S)-17/3082/2009-11
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473

-भगवान महावीर जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महाराज अपना उद्‌बोधन प्रवचन करते हुए (मानव मंदिर, नई दिल्ली)।

-इस शुभ अवसर पर पूज्यवर के प्रवचनों का आनंद लेते हुए समागत देश-विदेश के भक्तजन।

प्रकाशक व मुद्रक : श्री अरुण तिवारी, मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.) के.एच.–57 जैन आश्रम, रिंग रोड़, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे, पो. बो.–3240, नई दिल्ली–110013, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1 से मुद्रित।

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया

कवर पेज सहित
36 पृष्ठ

मूल्य 5.00 रूपये
मई, 2011

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

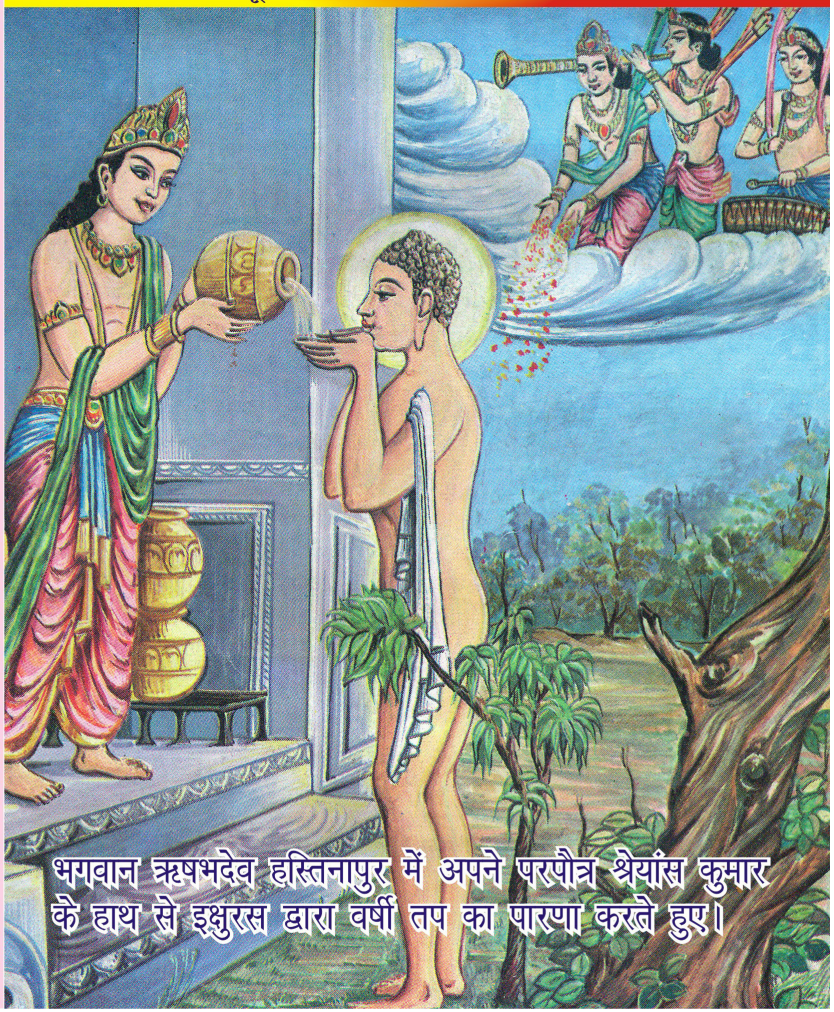

भगवान ऋषभदेव हस्तिनापुर में अपने परपौत्र श्रेयांस कुमार के हाथ से इक्षुरस द्वारा वर्षी तप का पारणा करते हुए।

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

वर्ष : 11 अंक : 05 मई, 2011

: मार्गदर्शन :
पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

: संयोजना :
साध्वी वसुमती
साध्वी पद्मश्री

: परामर्शक :
श्रीमती मंजुबाई जैन

: सम्पादक :
श्रीमती निर्मला पुगलिया

: व्यवस्थापक :
श्री अरूण तिवारी

वार्षिक शुल्क : 60 रुपये
आजीवन शुल्क : 1100 रुपये

: प्रकाशक :
मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)
पोस्ट बॉक्स नं. : 3240
सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने, नई दिल्ली - 110013
फोन नं.: 26315530, 26821348
Website: www.manavmandir.com
E-mail: contact@manavmandir.com

इस अंक में

01. आर्ष वाणी	-	5
02. बोध कथा	-	5
03. संपादकीय	-	6
04. गुरूदेव की कलम से	-	7
05. चिंतन-चिरंतन	-	12
06. गीतिका	-	15
07. पूजन-महिमा	-	16
08. गीतिका	-	17
09. पुराण-कथा	-	18
10. मूल्यवान पत्थर	-	19
11. लघु-कथा	-	20
12. व्रत-त्योहार	-	21
13. आत्मा का भोजन	-	22
14. प्राकृतिक चिकित्सा	-	23
15. स्वास्थ्य	-	25
16. चुटकुले	-	26
17. बोलें तारे	-	27
18. समाचार दर्शन	-	29
19. संवेदना-स्मृति	-	32
20. झलकियां	-	33

रूपरेखा-संरक्षक गण

श्री वीरेन्द्र भाई भारती बेन कोठारी, ह्युष्टन, अमेरिका
डॉ. प्रवीण नीरज जैन, सेनू फ्रेंसिस्को
डॉ. अंजना आशुतोष रस्तोगी, टेक्सास
डॉ. कैलाश सुनीता सिंघवी, न्यूयार्क
श्री शैलेश उर्वशी पटेल, सिनसिनाटी
श्री प्रमोद वीणा जवेरी, सिनसिनाटी
श्री महेन्द्र सिंह सुनील कुमार डागा, बैंकाक
श्री सुरेश सुरेखा आवड़, शिकागो
श्री नरसिंहदास विजय कुमार बंसल, लुधियाना
श्री कालू राम जतन लाल बरड़िया, सरदार शहर
श्री अमरनाथ शकुन्तला देवी,
अहमदगढ़ वाले, बरेली
श्री कालूराम गुलाब चन्द बरड़िया, सूरत
श्री जयचन्द लाल चंपालाल सिंघी, सरदार शहर
श्री त्रिलोक चन्द नरपत सिंह दूगड़, लाडनूं
श्री भंवरलाल उम्मेद सिंह शैलेन्द्र सुराना, दिल्ली
श्रीमती कमला बाई धर्मपत्नी
स्व. श्री मांगेराम अग्रवाल, दिल्ली
श्री प्रेमचन्द ओमप्रकाश जैन उत्तमनगर, दिल्ली
श्रीमती मंगली देवी बुच्चा
धर्मपत्नी स्वर्गीय शुभकरण बुच्चा, सूरत
श्री पी.के. जैन, लॉर्ड महावीरा स्कूल, नोएडा
श्री द्वारका प्रसाद पतराम, राजली वाले, हिसार
श्री हरबंसलाल ललित मोहन मित्तल, मोगा, पंजाब
श्री पुरुषोत्तमदास गोयल सुनाम पंजाब
श्री विनोद कुमार सुपुत्र श्री बीरबल दास सिंगला,
श्री अशोक कुमार सुनीता चोरड़िया, जयपुर
श्री सुरेश कुमार विनय कुमार अग्रवाल, चंडीगढ़
श्री देवकिशन मून्दडा विराटनगर नेपाल
श्री दिनेश नवीन बंसल सुपुत्र
श्री सीता राम बंसल (सीसवालिया) पंचकूला
श्री हरीश अलका सिंगला लुधियाना पंजाब
डॉ. अशोक कृष्णा जैन, लॉस एंजिलिस
श्री केवल आशा जैन, टेम्पल, टेक्सास
श्री उदयचन्द राजीव डागा, ह्युष्टन
श्री हेमेन्द्र, दक्षा पटेल न्यूजर्सी
श्री प्रवीण लता मेहत्ता ह्युष्टन
श्री अमृत किरण नाहटा, कनाडा
श्री गिरीश सुधा मेहता, बोस्टन
श्री राधेश्याम सावित्री देवी हिसार
श्री मनसुख भाई तारावेन मेहता, राजकोट
श्रीमती एवं श्री ओमप्रकाश बंसल, मुक्सर
डॉ. एस. आर. कांकरिया, मुम्बई
श्री कमलसिंह-विमलसिंह बैद, लाडनूं
श्रीमती स्वराज एरन, सुनाम
श्रीमती चंपाबाई भंसाली, जोधपुर
श्रीमती कमलेश रानी गोयल, फरीदाबाद
श्री जगजोत प्रसाद जैन कागजी, दिल्ली
डॉ. एस.पी. जैन अलका जैन, नोएडा
श्री राजकुमार कांतारानी गर्ग, अहमदगढ़
श्री प्रेम चंद जिया लाल जैन, उत्तमनगर
श्री देवराज सरोजबाला, हिसार
श्री राजेन्द्र कुमार केडिया, हिसार
श्री धर्मचन्द रवीन्द्र जैन, फतेहाबाद
श्री रमेश उषा जैन, नोएडा
श्री दयाचंद शशि जैन, नोएडा
श्री प्रेमचन्द रामनिवास जैन, मुआने वाले
श्री संपतराय दसानी, कोलकाता
लाला लाजपत राय, जिन्दल, संगरूर
श्री आदीश कुमार जी जैन,
न्यू अशोक नगर, दिल्ली
मास्टर श्री बैजनाथ हरीप्रकाश जैन, हिसार
श्री केवल कृष्ण बंसल, पंचकूला

आर्ष वाणी

वयसि गते कः कामविकारः शुष्के नीरे कः कासारः।
क्षीणे वित्ते कः परिवारो ज्ञाते तत्त्वे कः संसारः।।

-आद्य शंकराचार्य

अवस्था चले जाने पर काम विकार नहीं रहता, पानी सूखने के बाद उस स्थान को तालाब नहीं कहा जाता, धन चले जाने पर परिवार नहीं रहता तत्त्व को जानने के बाद संसार में कोई आसक्ति रहती नहीं, इसलिए भगवान का भजन कर।

बोध-कथा

देह अमर नहीं

एक राजा को फूलों का बहुत शौक था। उसने सुंदर सुगंधित फूलों के पच्चीस गमले अपने शयनखंड के प्रांगण में रखवा दिये थे। उनकी देखभाल के लिए एक नौकर रखा गया था। एक दिन नौकर से एक गमला टूट गया। राजा को पता चला तो वह आगबबूला हो गया। उसने आदेश दिया कि दो महीने के बाद नौकर को फांसी दे दी जाए। मंत्री ने राजा को बहुत समझाया, लेकिन राजा ने एक न मानी। फिर राजा ने नगर में घोषणा करवा दी कि जो कोई टूटे हुए गमले की मरम्मत करके उसे ज्यों का त्यों बना देगा, उसे मुंहमांगा पुरस्कार दिया जाएगा। कई लोग अपना भाग्य आजमाने के लिए आए लेकिन असफल रहे। एक दिन एक महात्मा नगर में पधारे। उनके कान तक भी गमले वाली बात पहुंची। वह राजदरबार में गए और बोले, 'राजन् तेरे टूटे गमले को जोड़ने की जिम्मेदारी मैं लेता हूं। लेकिन मैं तुम्हें समझाना चाहता हूं कि यह देह अमर नहीं तो मिट्टी के गमले कैसे अमर रह सकते हैं। ये तो फूटेंगे, गलेंगे, मिटेंगे। पौधा भी सूखेगा।' लेकिन राजा अपनी बात पर अडिग रहा।

आखिर राजा उन्हें वहां ले गया जहां गमले रखे हुए थे। महात्मा ने एक डंडा उठाया और एक-एक गमले पर प्रहार करते हुए सभी गमले तोड़ दिए। थोड़ी देर तक तो राजा चकित होकर देखता रहा। उसे लगा यह गमले जोड़ने का कोई नया विज्ञान होगा। लेकिन महात्मा को उसी तरह खड़ा देख उसने आश्चर्य से पूछा, 'ये आपने क्या किया?' महात्मा बोले, 'मैंने चौबीस आदमियों की जान बचाई है। एक गमला टूटने से एक को फांसी लग रही है। चौबीस गमले भी किसी न किसी के हाथ से ऐसे ही टूटेंगे तो उन चौबीसों को भी फांसी लगेगी। सो मैंने गमला तोड़कर उन लोगों की जान बचाई है।' राजा महात्मा की बात समझ गया। उसने हाथ जोड़कर उनसे क्षमा मांगी और नौकर की फांसी का हुक्म वापस ले लिया।

सम्पादकीय

अक्षय तृतीया का महत्त्व

अवसर्पिणी काल में अयोध्या नगरी में नभिराय नाम के अंतिम कुलकर (मनु) हुए उनके मरुदेवी नाम की पटरानी थी। रानी के गर्भ में जब प्रथम तीर्थंकर आये तब देवों ने गर्भ कल्याणक उत्सव बड़े ठाठ से मनाया और जन्म होने पर जन्म कल्याणक मनाया। फिर दीक्षा होने के बाद आदिनाथ ने छह मास तक घोर तपस्या की। छह महीने के बाद चर्या अर्थात् आहार विधि के लिए आदिनाथ भगवान ने अनेक ग्राम नगर शहर में विहार किया, किन्तु जनता तथा राज्य के लोगों को आहार की विधि मालूम न होने के कारण भगवान को धन, कन्या, पैसा सवारी आदि अनेक वस्तुएं भेंट करनी चाही। भगवान ने यह सब अंतराय का कारण जानकर पुनः वन में पहुंचे और छह महीने का तपश्चरण योग धारण कर लिया। अवधि पूर्ण होने के बाद पारणा करने के लिए चर्यामार्ग से ईर्या-पथ-शुद्धि करते हुए ग्राम नगर में भ्रमण करते-करते कुरु जंगल नामक देश में पधारे। वहां हस्तिनापुर नाम के नगर में कुरुवंश का शिरोमणि महाराजा सोम राज्य करते थे। उनके श्रेयांस नाम का एक भाई था। उसने सर्वार्थ सिद्धि नामक स्थान से यहां जन्म लिया था। एक दिन रात्रि के समय सोते हुए उसे रात्रि के आखिरी भाग में कुछ स्वप्न आये। उन स्वप्नों में मंदिर, कल्पवृक्ष, सिंह, वृषभ, चन्द्र, सूर्य, समुद्र, आग, मंगलद्रव्य, अपने राजमहल के समक्ष स्थित है, ऐसा स्वप्न में देखा।

उसने प्रभात बेला में उठकर उक्त स्वप्न अपने ज्येष्ठ भ्राता से कहा। ज्येष्ठ भ्राता सोमपुत्र ने अपने विद्वान पुरोहित को बुलाकर स्वप्नों का फल पूछा। पुरोहित ने जवाब दिया- हे राजन्! आपनके घर पर श्री आदिनाथ भगवान पारणा के लिए पधारेंगे।

भगवान आदिनाथ आहार हेतु ईर्या समितिपूर्वक भ्रमण करते हुए उस नगर के राजमहल के सामने पधारे, तब सिद्धार्थ नाम का कल्पवृक्ष ही मानो अपने सामने आया है ऐसा सबको आभास हुआ। राजा श्रेयांस को आदिनाथ भगवान का श्रीमुख देखते ही उसी क्षण अपने पूर्वभव में एक सरोवर के किनारे दो चारण मुनियों को आहार दिया था उसका जातिस्मरण हो गया। अतः आहारदान की समस्त विधि जानकर श्री आदिनाथ भगवान को तीन प्रदिक्षणा देकर पडगाहन किया व भोजन गृह में ले गए।

प्रथमदान विधिकर्ता ऐसा वह दाता श्रेयास राजा और उनकी धर्मपत्नी सुमति देवी व ज्येष्ठ बंधु सोमपुत्र तथा उनकी पत्नी लक्ष्मीमती सभी ने मिलकर श्री आदिनाथ भगवान को सुवर्ण कलशों द्वारा तीन खण्डी इक्षुरस नवाधाभक्ति पूर्वक आहार में दिया। इस प्रकार आदिनाथ की आहार चर्या निरंतराय सम्पन्न हुई। आहार चर्या करके वापिस जाते हुए भगवान आदिनाथ ने सबदाताओं को 'अभयदानमस्तु' अर्थात दान इसी प्रकार कायम रहे, इस आशय का आशीर्वाद दिया। यह आहार वैशाख सुदी तीज को सम्पन्न हुआ था। उसी समय से 'अक्षय तृतीया' नाम का पुण्य दिवस प्रारम्भ हुआ। इसी को आखातीज भी कहते है। यह दिन हिन्दू धर्म में भी बहुत पवित्र माना जाता है। ○ **निर्मला पुगलिया**

गुरुदेव की कलम से

अंत नहीं होता शस्त्र-परम्परा का

भगवान महावीर कहते हैं शस्त्र की परंपरा आगे बढ़ती जाती है। यह कभी रुकती नहीं। यह संभव है कि किसी बिन्दु पर उसे यथास्थिति में रखा जा सके। अगर शस्त्र का अस्तित्व है तो उसकी परम्परा अनिवार्यतः होगी और वह अपनी मूल प्रकृति के कारण आगे से आगे बढ़ती ही जाएगी।

मानव जाति का इतिहास इस नग्न सत्य का साक्षी है। प्रागूऐतिहासिक युग का मानव पत्थरों से लड़ता था। पुरातत्व-वेत्ताओं ने पूर्व प्रस्तर एवं प्रस्तर युगों में व्यवहृत पत्थर के चाकुओं, कुल्हाड़ियों और गदाओं को प्रायः समस्त प्रागूऐतिहासिक सभ्यताओं में पाया है। कालान्तर में तीर-कमान बने। हाथी दांत, लकड़ी, गेंडे के सींग आदि का प्रयोग महाभारत और उसके समकालीन ग्रन्थों में आया है। ताम्र और लौह-युगीन सभ्यताओं के साथ तलवार, कृपाण, भाले, बरछियां आदि बने और इनका प्रयोग भारत में तो मुगलों के आने तक चलता रहा। उनके साथ बारूद आई। बाबर ने राणा सांगा पर बारूद की ताकत से विजय पाई। बारूद और विस्फोटकों का विकास अधिकतर पश्चिम में हुआ। मुगलों के तोपखानों का संचालन और विकास, डचों, फ्रांसीसियों और पुर्त्तगालियों ने किया। फिर अंग्रेज आए। प्रथम एवं द्वितीय महायुद्ध में बारूद का व्यापक प्रयोग हुआ।

जिस व्यक्ति के नाम पर संसार का सर्वश्रेष्ठ नोबल पुरस्कार दिया जाता है, वह डाइनामाइट का अविष्कारक था। आज ये सब बहुत पीछे रह गए हैं। परमाणु शक्ति की खोज तथा उसके शस्त्र-रूप में हिरोशिमा तथा नागासाकी पर द्वितीय महायुद्ध के दौरान अमेरिका द्वारा प्रयोग विश्व-युद्धों के इतिहास की अभूतपूर्व घटना है। एयर मार्शल टिबेट्स जिसने ये बम गिराए थे, अपने हाथों हुई संहार लीला देखी तो उसका सारा मानसिक संतुलन डगमगा गया। अपराध से पीड़ित उसकी मानवीय संवेदना अनेक बार मानसिक चिकित्सा से गुजरने के बाद भी उसे जन्म-भर पीड़ा देती रही। परमाणु शस्त्रों की अन्धी दौड़ ने पचास मेगाटन और सौ मेगाटन के विश्व-विनाशक शस्त्रों का निर्माण करने के बाद भी संतोष नहीं पाया है। युद्ध विशेषज्ञों का अनुमान है कि आने वाले चन्द दशकों में जहरीली गैसों तथा रोगाणुओं का प्रयोग भी युद्धों में हो सकता है।

भय है जनक शस्त्रों का

मानसिक विकृतियों का भी शस्त्र रूप में प्रयोग किया जा सकता है। इनके प्रयोग द्वारा पूरा संसार पागलों और अपराध कर्मियों से भरा जा सकता है। भावी शस्त्रों की भयंकर संभावनाओं के आतंक से सारा मानव-समाज पीड़ित है। विश्व के प्रमुख वैज्ञानिकों और राजनेताओं ने बार-बार निःशस्त्रीकरण की आवाज उठाई। शस्त्रों को परिसीमित करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय संधियां होती रही हैं और उनका उल्लंघन करते हुए सारे देश शस्त्र-निर्माण में लगे हैं। क्योंकि किसी को किसी का विश्वास नहीं है। सबको एक दूसरे से भय है। भय से भयानक शस्त्रों का निर्माण होता जा रहा है और उनसे भय बढ़ता ही जा रहा है। अनेक बार सारे पारमाणविक शस्त्रों को सुदूर आकाश में ले जाकर नष्ट कर देने के प्रस्ताव विश्व के विकसित राष्ट्रों ने एक दूसरे के आगे रखे हैं, लेकिन उन पर चाहते हुए भी वे सहमत नहीं हो पाए हैं। पहल करने को कोई तैयार नहीं है। क्योंकि भय और आशंका उन्हें करने नहीं दे रही। जब तक शस्त्रों का समूल उन्मूलन नहीं हो जाता, मानव जाति को भय से मुक्ति नहीं मिलेगी। लेकिन इसमें बाधक भी मानव का पारस्परिक भय ही है। शस्त्रों के उत्पादन और प्रयोग के परिसीमन के प्रयास सफल नहीं हो सकते। क्योंकि शस्त्रों से अभिन्नरूप से जुड़ी है उनकी परंपरा जो रुक नहीं सकती। भगवान महावीर ने यह बात आज से पच्चीस सौ वर्ष पूर्व कही थी और आज संसार की वर्तमान दशा इस जीवन्त सत्य की साक्षी है।

भय और हिंसा का अभिन्न सम्बन्ध

भगवान महावीर ने कहा है- हिंसा से भय, भय से हिंसा, यह एक निरन्तर गतिमान अधोगामी चक्र है जिसका कोई अंत नहीं है। जब तक भय है, हिंसा होगी और जब तक हिंसा है, भय होगा। अतीत के भय की स्मृति वर्तमान के भय की चेतना तथा भविष्य के भय की आशंका हिंसा में अनिवार्यतः परिणत होती है।

अप्पेगे हिंसिसु मेत्ति वहंति
अप्पेगे हिंसंति मेत्ति वहंति
अप्पेगे हिंसिस्संतिमेति वहंति।

इसने मुझे मारा है, यह मुझे मार रहा है, यह मुझे मारेगा, यह सोचकर वे एक दूसरे को मारते हैं। यह एक अंतहीन क्रम है। आज सारा विश्व इसकी लपेट में है। इसे रोका नहीं जा सकता।

परस्पर क्रिया-प्रतिक्रिया के दुर्निवार नियमों से बंधा हुआ यह क्रम अप्रतिहत और अपरिहार्य है। इस द्वैध में निःशस्त्री करण सम्भव नहीं और सीमित शस्त्रीकरण कोई अर्थ नहीं रखता। शस्त्र शब्द का प्रयोग महावीर ने विशेष अर्थ में किया है। आदमी शस्त्र बाद में बनाता है, पहले वह शस्त्र बनता है। वह जो बनाता है, वे तो साधनमात्र है, उपादान नहीं। साधन कोई भी हो सकता है। मंदिर का घंटा पूजा करने के समय बजाने के काम आता है, संगीतमय ध्वनि मुखरित करने में बाद्य-यंत्र के रूप में प्रयुक्त होता है। लेकिन कोई पागल पुजारी क्रोध से अंधा होकर उससे किसी का सिर भी फोड़ सकता है। वह अपने आप में शस्त्र नहीं है, शस्त्र बना लिया जाता है। यह बाद की घटना है। उससे पहले कि पुजारी मंदिर के घंटे को शस्त्र बनाता, वह स्वयं शस्त्र बन चुका है। आक्रामकता का भाव उदित होते ही व्यक्ति स्वयं शस्त्र बन जाता है। फिर एक से एक बढ़कर हिंसा के साधन खोज निकालता है। वह साधन आदिमानव की पत्थर की कुल्हाड़ी भी हो सकती है और आज का ''गाइडेड मिसाइल'' भी। दोनों से परिणमित ध्वंश के आयामों में आकाश-पाताल का अन्तर हो सकता है लेकिन यह अंतर बाह्यकारणों के सापेक्ष है। भीतर का आदमी शस्त्र बन चुका है।

भीतर से बनना है अशस्त्र

इसलिए भगवान महावीर केवल यही नहीं कहते कि शस्त्र मत बनाओ या जो बने हुए शस्त्र हैं उन्हें विसर्जित कर दो। उससे कुछ होने वाला नहीं। एक बार सारे शस्त्र शून्य अंतरिक्ष में विसर्जित कर देने पर भी यदि आदमी भीतर से अशस्त्र नहीं बना, तो नए सिरे से और भी अधिक विनाशक शस्त्रों का निर्माण कर डालेगा। अगर भीतर से वह बन चुका है अशस्त्र तो शस्त्रों का होना या न होना उसके लिए कोई मायने ही नहीं रखता। शस्त्र हमारा मन है। मन से वाणी और कर्म तक शस्त्रों की परम्परा बढ़ती रहती है, उसके आयाम फैलते रहते हैं। इन आयामों को सीमाबद्ध नहीं किया जा सकता। इनका समूल उन्मूलन ही सम्भव है और वह तभी जबकि भीतर शस्त्र की सत्ता ही न रही हो।

निःशस्त्रीकरण एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्न है। महावीर मानते हैं कि समस्या पारिवारिक हो या सामाजिक, राष्ट्रीय हो या अन्तर्राष्ट्रीय उसका उद्गम व्यक्ति के भीतर है। वहां से उसकी परिव्याप्ति सर्वत्र होती है। व्यक्ति का जीवन उसके मन की प्रतिच्छाया है। मन है बाहर के पर्यावरण से मानसिक चेतना की क्रिया-प्रतिक्रिया का अनवरत क्रम। यह संवादी (हार्मोनियम) हो सकता है। विसंवादी (डिस-हार्मोनियस) भी हो सकता है। यह संग्रहात्मक

हो सकता है, विग्रहात्मक भी हो सकता है। यह एकात्मक हो सकता है, विभेदात्मक भी हो सकता है। यही शस्त्र है, यही अशस्त्र है। जहां यह अपने पर्यावरण पर आक्रमण हो जाता है, शस्त्र बन जाता है। जहां आक्रमण नहीं होता, अशस्त्र बन जाता है। आक्रामकता को मनोवैज्ञानिक मानव की मूल वृत्ति मानते हैं। डार्विन अपने विकासवाद के सिद्धान्त की आधारशिला संघर्ष और आक्रामकता पर रखते हैं। अस्तित्व के लिए संघर्ष तथा श्रेष्ठ का कायम रहना, सबसे शक्तिशाली का बचा रहना, दुर्बलों का मिट जाना यह विकास की प्रक्रिया का अनिवार्य फलित है, प्रकृति का अनुल्लंघनीय नियम है डार्विन और उनके मतानुयायियों की दृष्टि में। अपने अस्तित्व को बचाने और उसकी सत्ता का निरन्तर विस्तार करने के लिए अनवरत संघर्ष को ही अधिकारी माना है, डार्विन ने विकास के समस्त श्रेय का।

संघर्ष है स्वभाव को पाने का

डार्विन की प्रपत्ति (कांन्सेप्ट) सत्य है, लेकिन खंडित सत्य है। चेतना अनन्त पराक्रममयी है। इसे महावीर, बुद्ध, कृष्ण, क्राइस्ट सभी मानते हैं। जड़ द्रव्य की कारा से विमुक्ति के लिए वह सतत संघर्षरत है, यह सभी स्वीकार करते हैं। अलेक्जेण्डर ने अपने प्रख्यात ग्रन्थ 'स्पेस टाइम एण्ड डीटी' में यही प्रतिपादित किया है दिक्काल के चौखटे, (स्पेस टाइम) कण्टीन्यूअस में आबद्ध अनन्त रूपों में आत्मा अपनी निर्मल निर्मुक्त चैतन्य सत्ता की प्राप्ति के लिए, जो उसका मूल स्वभाव है, सतत संघर्ष कर रही है। जड़ द्रव्य के आवरणों का निरंतर विरल होते जाना ही चेतना के प्रकाश का प्रखरतर होता है। यह निरन्तर परिवर्द्धमान अन्तः प्रकाशन ही विकास है- 'इवोल्युशन' है। नितान्त अव्यक्त स्थिति से लेकर स्वयं संबुद्ध परमात्मा सत्ता तक, चेतना के सतत संघर्ष की अगणित स्थितियां मिलती हैं। इनमें शक्ति का निरन्तर ऊर्ध्वगमन होता रहता है। जहां यह अपेक्षित बिन्दु से कम है पराभूत होकर मिट जाता है और पुनः उससे अधिक शक्तिमत्ता के साथ प्रस्फुटित होता है।

लेकिन यह संघर्ष जड़ता से, उसकी सीमाओं से, प्रकृति के अवरोधों से है चाहे वे प्रकृति की जड़ द्रव्यमयी सत्ता में मूर्तिमान हों अथवा भीतर के जीवों की मानसिक जड़ता में प्राणियों का प्रकृति से, वातावरण से, अन्य जीवों से भी जो वातावरण के अंग हैं, संघर्ष चलता रहा है जिसमें दुर्बल की पराजय और विनाश तथा शक्तिशाली की विजय और अस्तित्व सत्ता अन्तर्भूत है। लेकिन यह प्राणियों के विविध वर्गों में होता है- प्रजातियों में। अपनी ही प्रजाति के प्राणी का विनाश कर कोई प्राणी आगे नहीं बढ़ सकता। जीव शास्त्रियों के अनुसार आदमी और चूहा, ये दो ही प्राणी हैं जो अपनी ही प्रजाति के प्राणियों का संहार करते हैं। शेष सारे जीव-जगत में ऐसा कहीं देखने में नहीं आता। एक शेर दूसरे शेर को,

एक सांप दूसरे सांप को नहीं मारता। उनमें समूह चेतना तो नहीं है, लेकिन मूल प्रवृत्ति (इस्टिक्ट) ही उन्हें ऐसा करने से रोकती है। मानव एक सामाजिक प्राणी है। उसमें समूह चेतना है। विकास की संघर्षमयी प्रक्रिया से गुजरकर निरन्तर आगे बढने का कारण यही सामाजिकता है। सहयोग की सामूहिक शक्ति से ही वह प्रकृति के अवरोधों से लड़कर जीतता आया है। सामाजिकता का मूल सूत्र है सहयोग, विग्रह नहीं, 'डिसहार्मनी' नहीं। मानव अपने लिए शस्त्र न बने- परिवार, समाज राष्ट्र और सारे स्तरों पर- यही निःशस्त्रीकरण है, अहिंसा है।

अभय ही सम्पूर्ण निःशस्त्रीकरण

निःशस्त्रीकरण, अर्थात मैं किसी के लिए शस्त्र नहीं बनूं, किसी के साथ संघर्षमय, आक्रामक और विसंवादी नहीं बनूं- यह लोक-जीवन की एक नैतिक अपेक्षा है। उसकी मूल प्रेरणा सामाजिक चेतना है, प्रेम और सहयोग की भावना है। लेकिन आज निःशस्त्रीकरण की मूल प्रेरणा अपने विनाश की आशंका है, भय है, अतः वह शस्त्रों का निर्माण और उपयोग परिसीमित करने तक ही सीमित रह गया है। इस रूप में वह सार्थक एवं सफल नहीं हो सकता। क्योंकि भय का मूल हिंसा है, वैर-वृत्ति है और वह भय से पोषित होकर निरन्तर बढ़ती ही जाती है। उसके सामानान्तर ही बढ़ती रहती है शस्त्रों की परम्परा। भय से तनावयुक्त संतुलन को कुछ समय तक बलात् कायम रखने का प्रयास किया जाता है, जो अन्ततः असफल होता है क्योंकि तनाव एक सीमा पार कर मरणेच्छा में बदल जाता है और उसका बांध टूटने पर अप्रत्याशित विनाश होता है। जब तक हम वैर-वृत्ति से आक्रान्त है, भय होगा। भय-पीड़ित है, तब तक शस्त्रों की परम्परा सीमित और उन्मूलित नहीं होगी। जब तक हम अपने आप में शस्त्र हैं तब तक शस्त्रों की अंधी दौड़ रुक नहीं सकती। जब हम स्वयं में अशस्त्र हो जाते है तो निःशस्त्रीकरण स्वतः हो चुकता है- चाहे शस्त्रों का अस्तित्व रहे या न रहे।

तरस आ रहा धार्मिक जन कैसा जीवन जीता है
मन में कपट-योजनाएं पर हाथों में गीता है
जीव दया के लिए छानकर पीता जो पानी को
वही खून बिन छाना लोगों का कैसे पीता हैं

-आचार्य रूपचन्द्र

आचार्य हरिभद्र और आर्या महत्तरिका

○ **संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री**

आचार्य हरिभद्र दीक्षा से पूर्व चित्तौड़ के राजा जितारि के राज पुरोहित अग्निहोत्री ब्राह्मण थे। विलक्षण प्रतिभा के धनी हरिभद्र एक बार शिविका पर बैठे कहीं जा रहे थे और उनके भक्त बड़ी श्रद्धा भावना से उनका जयजय कार कर रहे थे।

पंडित हरिभद्र को अपने ज्ञान का इतना अहंकार था कि उन्होंने एक हाथ में जम्बूद्वीप की एक शाखा ले रखी थी। पेट पर सोने का पट्टा बांधा हुआ था। शिविका के एक कोने में एक कुदाल, दूसरे कौने में जाल और तीसरे कौने में एक सीढी लटक रही थी। इसका आशय यह था कि पूरे जम्बूद्वीप में हरिभद्र से बढकर कोई ज्ञानी नहीं है। ज्ञानाधिक्य के कारण कहीं पेट फट न जाए अतः पेट पर सोने का पट्टा बांधा गया है। कोई प्रतिवादी हरिभद्र से डरकर पाताल में चला जाए तो कुदाल से खोदकर निकाला जा सके। अगर कोई प्रतिवादी पराजय के भय से समुद्र में छिप जाएगा तो उसे जाल फेंक कर उसमें पिरोया जाएगा। और जो कोई प्रतिवादी डरकर आकाश में उड़ने की कोशिश करेगा उसे सीढ़ी पर चढकर पकड़ा जाएगा।

एक तरफ ब्राह्मण हरिभद्र में इतना अहंकार, दूसरी तरफ उनकी प्रतिज्ञा थी कि जिस किसी के द्वारा उच्चारित पाठ का अर्थ मैं नहीं समझ पाऊंगा उसका शिष्यत्व स्वीकार कर लूंगा।

ऐसी विचित्र मनोवृत्ति वाले हरिभद्रशिविका में बैठे शहर के राजपथ पर विचरण कर रहे थे कि अचानक राजकीय गजशाला का एक मदोन्मत हाथी गजशाला के बंधन तोड़ कर शहर की सड़कों पर निकल पड़ा। मार्गवर्ती लोग भागो, बचाओ इस तरह कोलाहल करते जहां जिसको आश्रय मिल रहा था घुस रहे थे। हरिभद्र की शिविका लिए जा रहे लोग भी अपने प्राण बचाने की धुन में शिविका को वहीं छोड़ तितर बितर हो गए। शिविका पर बैठे हरिभद्र पागल हाथी की मार से बचने के लिए एक मकान की दिवाल से सटकर खड़े हो गए। वह दिवाल जैन साध्वियों के उपाश्रय की थी। जिसमें साध्वियां शास्त्रों का स्वाध्याय कर रही थीं। उस क्रम में एक गाथा आई-

चक्कि दुग्गं हरि पणगं
पणग चक्कीण केसवो चक्की
केसव चक्की, केशव दुचक्की
केसी अ चक्की अ

जब दीवार से सटे हरिभद्र के कानों उपरोक्त गाथा पड़ी तो वे असमंजस में पड़ गए। बहुत प्रयास करने पर भी अर्थ समझ में नहीं आया। अर्थ जानने की उत्कंठा को लिए वे साध्वियों के उपाश्रय की सीढ़ियां चढ गए।

आचार्य जिनभद्र सूरी की सुशिष्या आर्या महत्तरा याकिनी को संबोधित करते हुए हरिभद्र ने कहा- आप यहां क्या गुनगुना रही थी। मैं राजपुरोहित हरिभद्र आप द्वारा उच्चरित गाथा का अर्थ जानना चाहता हूं। कृपया अर्थ बोध कराने की कृपा करें। याकिनी महत्तरा ने रात्रि का समय देखकर हरिभद्र से कहा- अभी रात है। हम साध्वियां रात को पुरूष जाति से वार्तालाप नहीं कर सकतीं। इसी शहर में चातुर्मास बिता रहे हमारे आचार्य जिनभद्र सूरि हैं। आप उनसे इस गाथा का अर्थ समझने का कष्ट करें। जिज्ञासु हरिभद्र ने कहा- आर्ये मेरी गुरू तो आप ही हैं। आप ही मेरा मार्ग दर्शन करें कि कहां है जिनभद्र सूरि महाराज।

विप्रवर सुबह सूर्योदय के पश्चात आने का कष्ट करें। हम आपको गुरूदेव की सन्निधि में लेचलेंगे।

सूर्योदय होते ही हरिभद्र याकिनी महत्तरा के उपपात में पहुंच गए और आर्या महत्तरा उन्हें आचार्य जिनभद्र सूरि महाराज के चरणों में ले गई। अर्थ जिज्ञासु, ज्ञान पिपासु हरिभद्र ने ज्ञानोपलब्धि के लिए जिनभद्र से दीक्षा स्वीकार कर ली।

आर्या याकिनी महत्तरा आचार्य हरिभद्र के जीवन को संसार से विरक्त बनाकर अध्यात्म की तरफ मोड़ने में ही निमित्त नहीं बनीं। उन्होंने आचार्य हरिभद्र के प्रतिशोधात्मक क्रोध को शान्त कर उन्हें घोर अकृत्य से भी बचाया था और 1444 ग्रंथों की रचना करवाकर जैन साहित्य भंडार को भी भरवा दिया था।

एकबार का प्रसंग है। आचार्य हरिभद्र ने प्रमाणशास्त्र की चर्चा के प्रसंग में बौद्धों के प्रमाण शास्त्र को विकसित बताते हुए अपने भांजे हंस और परमहंस को बौद्ध विहार जाकर अध्ययन करने की प्रेरणा दी। उस समय धार्मिक कट्टरता चरम उत्कर्ष पर थी। एक धर्म वाले दूसरे धर्म वालों को अपना ज्ञान-शिक्षा नहीं देते थे। हंस, परमहंस की जब लगभग

शिक्षा पूरी हो गई तब किसी को संदेह हो गया कि वहां जैन धर्म के अनुयायी छद्म वेश में विद्या ग्रहण कर रहे हैं। वहां के प्रबंधकों ने परीक्षार्थ ऊपर की छत पर सब छात्रों को चढ़ा दिया। और सीढियों में दो मूर्तियां रख दी। एक भगवान महावीर की दूसरी भगवान बुद्ध की। फिर सबको नीचे उतरने के लिए कहा जो बौद्ध छात्र थे वे भगवान महावीर की मूर्ति पर पैर रखकर नीचे उतर गए। लेकिन जब हंस, परमहंस की नीचे उतरने की बारी आई तो उन्होंने संकल्प किया कि चाहे हमें प्राण देने पडें लेकिन अपने आराध्य देव की मूर्ति की आशातना नहीं करेंगे। जैसे ही वे बुद्ध की मूर्ति पर पैर धर के नीचे उतरे तो सबको पता चल गया कि ये ही है वे जैन छात्र जो छद्मवेश में हमारी विद्या ग्रहण कर रहे हैं। जब हंस, परमहंस अपना बचाव करने के लिए भागे तो उन्हें पकड़ने के लिए पीछे पुलिसकर्मी कर दिए गए। भागते-भागते हंस नामक विद्यार्थी पुलिस की पकड़ में आ गया जिसे बाद में मार दिया गया। और परमहंस पुलिस की आंख चुराकर अपने मामा हरिभद्र सूरि के पास पहुंच गया वहां उसने सारा घटनाक्रम सुनाते हुए अपने भाई की मौत का प्रसंग बताया।

बौद्धों द्वारा अपने भांजों के साथ किए गए अत्याचार से आचार्य हरिभद्र क्षुब्ध हो गए। क्रोध का आवेग इतना भयानक था कि वे अपने संत होने को भी भूल गए। अपने नियम धर्म को भी विस्मृत कर बैठे। प्रतिशोध में जलते हुए आचार्य हरिभद्र ने बौद्व विहार में पढ रहे 1444 छात्रों और अध्यापकों को मंत्रबल से आकृष्ट किया और अपने उपाश्रय के हाल की छतों से लटका दिया। उसके नीचे भट्टियां सुलगा कर तेल के कड़ाहे चढवा दिये क्योंकि खौलते तेल में उन सब को उबालने का ईरादा था।

जब याकिनी महत्तरा को इस जघन्य कृत्य का पता चला तो वे हरिभद्र सूरि के उपाश्रय में आई। उस समय उपाश्रय के सभी गेट बंद थे। तब आर्या महत्तरा ने हरिभद्र से गेट खुलवाने के लिए प्रार्थना की। आचार्य हरिभद्र ने कुछ समय रूककर आने को कहा, तब आर्या महत्तरा बोली एक अति जरूरी कार्य से मुझे आचार्य महाराज के दर्शन करने हैं। जब गेट खोला गया तो आर्या महत्तरा आचार्य हरिभद्र के समीप बैठकर कहने लगी कि आचार्यवर? आज मेरे पैर के नीचे दबकर एक मेंढक मर गया। कृपया मुझे प्रायश्चित दीजिए। आचार्य हरिभद्र ने आर्या को डांटते हुए कहा- आप सब साध्वियों में बड़ी होकर इतना सा भी ध्यान नहीं रखती। एक पंचेन्द्रिय जीव की हत्या कर दी। आपको तैले की तपस्या करनी पड़ेगी। तभी मौका देखकर आर्या महत्तरा बोली- आर्यवर? एक मेंढक की अनजान हत्या का यह दंड है फिर जानबूझ कर ये 1444 छात्र मारे जा रहे हैं उसका क्या दंड होगा।

आर्या महत्तरा की बात सुनकर एकबार तो आचार्य हरिभद्र सकपका गए। दूसरे ही क्षण इस नृशंस हत्या के कार्य से उपरत होकर उन्हें मुक्त कर दिया और 1444 व्यक्तियों को मारने का जो मानसिक संकल्प था उसकी शुद्धि के लिए 1444 ग्रंथ रचने का संकल्प किया। वे ग्रंथ आज भी जैन साहित्य की धरोहर के रूप में सुरक्षित हैं। आर्या याकिनी महत्तरा की प्रेरणा ने जैन धर्म को एक युग प्रभावक एक समृद्ध आचार्य दिया और साथ ही दिया साहित्य भंडार जो साध्वीश्री की प्रेरणा से रचा गया।

गीतिका

-साध्वी मंजुलाश्री

कोई आज जा रहा है, कल कोई जाने वाला
हम हैं सभी मुसाफिर, दुनियां है धर्मशाला।।

नीरोग तन हमारा, परिवार धन हमारा
पागल बना रही है, हमारेपन की हाला।

है अप्सरा सी नारी, संतान प्यारी प्यारी
संसार का यह घेरा मकड़ी का एक जाला।

कैसा अखंड शासन, सोने का यह सिंहासन
जब तक खुली है आंखें, फिर राम रखवाला।

प्रभुनाम है अनूठा, सब काम दाम झूठा
आराम से जपो अब प्रभु नाम मंत्र-माला।

तर्ज-संकल्प एक ही हो...

पूजन-महिमा

एक मुखी रुद्राक्ष का महत्व

रूद्राक्ष भगवान रुद्र (शंकर) की मानव जीवन के लिए एक अमूल्य, अद्‌भुत एंव चमत्कारपूर्ण देन है। इसमें कोई दोराय नहीं कि 'रुद्राक्ष' में स्वतः ही अनेकानेक सिद्धियों का वास है। शिव पुराण में भगवान शंकर जी ने रुद्राक्ष को अपना ही स्वरूप माना है। यह उन्हें इतना रूचिकर लगा कि वह इसके दाने-दाने में अपनी सूक्ष्म शक्ति के रूप में निवास करने लगे।

जो व्यक्ति अपनी छुपी हुई शक्तियों को जागृत करना चाहते हैं, अमन-चैन का जीवन जीना चाहते हैं, उन्हें विधि-विधान के अनुसार उन सभी व्यक्तियों को चाहे वे किसी भी वर्ग या लिंग के हों। हर राशि के स्त्री-पुरुष, बच्चे, ब्रह्मचारी एवं गृहस्थ किसी भी आश्रम में क्यों न हों, उन्हें सदैव रुद्राक्ष का नित्य दर्शन, स्पर्श, पूजन व धारण करना चाहिए।

एक मुखी रुद्राक्ष

रुद्राक्ष शिरोमणि निश्चय ही 'एक मुखी दाना' है। अति दुर्लभ और परम प्रभावशाली तथा अल्प समय में ही शिवजी का सान्निध्य प्रदान करने वाला यह एक मुखी रुद्राक्ष दाना साक्षात भगवान शिव का ही स्वरूप माना जाता है। इसमें स्वयं भगवान शिव ही विराजते हैं।

एक मुखी दाना अत्यंत दुर्लभ गुणी, अचूक प्रभावी और अति पवित्र फल है। अन्य सभी रुद्राक्षों में सबसे अधिक प्रभावशाली एक मुखी रुद्राक्ष ही होता है। अपनी गुणवत्ता के कारण यह अमूल्य है।

अपने गुणों और प्रभावशीलता के कारण इस एक मुखी रुद्राक्ष के बारे में कहा गया है कि जो व्यक्ति विधिपूर्वक शुद्ध करके इस रुद्राक्ष का पूजन, दर्शन, स्पर्श व धारण किया करते हैं, उनके घर में कभी दरिद्रता नहीं आती। वहां लक्ष्मी का स्थायी निवास हो जाता है तथा उसका घर धन-धान्य, वैभव, प्रतिष्ठा, विद्या, पद, पुत्र और दैवीय कृपा से भर जाता है।

रुद्राक्ष की सभी श्रेणियों में एक मुखी सर्वश्रेष्ठ दाना होता है। मुख्यतः इसे दो आकारों में देखा गया है- गोल और अर्द्ध चंद्राकार अथवा काजू के आकार का दाना। असली एक मुखी रुद्राक्ष जो उपलब्ध होते हैं, वे या तो उत्तराखण्ड (हिमालय) के जंगलों में अथवा दक्षिण भारत (रामेश्वरम) के जंगलों में पैदा होते हैं। एक मुखी रुद्राक्ष दाना चाहे जिस आकृति का हो, उसे वास्तविक और शुद्ध होना चाहिए। एक मुखी रुदाक्ष दाने को दोनों ओर सोने की टोपी (छतरी) मढ़वाकर धारण करना उत्तम होता है तथा तांबे अथवा चांदी के तार में अथवा लाल डोरे में पिरोकर भी इसे धारण कर सकते हैं।

यदि असली, निर्दोष एक मुखी रुद्राक्ष प्राप्त हो जाए, तो उसे पूर्ण श्रद्धा, सुरक्षा के साथ लाकर घर के किसी पवित्र स्थान पर स्थापित करके उसका नित्य दर्शन, पूजन, स्पर्श करते रहें।

-पं गणेश मोहन पंचोली

○ साध्वी मंजुश्री

भजन

आओ-2 प्रभु जी मेरे सूनी रे नगरिया,
सूख रही है मन की बगिया बरसो बन बदरिया।

मानव जन्म मिला पुण्यों से, करने निज कल्याण है,
मोह माया में उलटा फँस कर भूल गया भगवान है,
सही दिशा बतलाओ तेरी कौन सी डगरिया।

महल बना मिट्टी चूने का, मूर्ख कहे घर मेरा है,
श्वास रूके यह हंस उड़ेगा, होगा पर भव डेरा है,
छोड़ चलेगा इक दिन अपनी, ऊँची रे अटरिया।

सत्संग में कभी न आया, नहीं प्रभु का नाम लिया,
धन वैभव में फँसकर तूने, अमृत तज विषपान किया,
धो नहीं पाया अब तक मन की मैली रे चदरिया।

जन्म-2 की मैं दुखियारी, दर्शन दो अन्तर्यामी,
पल-पल ध्यान लगाऊँ प्रभु में, ऐसी शक्ति दो स्वामी,
बून्द-2 से भर दो खाली, मंजू की गगरिया।

तर्ज- नगरी-2 द्वारे-2

भावों पर विजय पाने वाला ही होता है साधक

जैन धर्म में चौबीस तीर्थंकर हुए हैं, जिनमें सबसे पहले तीर्थंकर हुए हैं भगवान ऋषभदेव। गोम्मटेश इन्हीं के पराक्रमी पुत्र हुए हैं, जिन्हें बाहुबली के नाम से जाना जाता है। बाहुबली तीर्थंकर नहीं थे और न ही आदि तीर्थंकर के ज्येष्ठ पुत्र ही। लेकिन फिर भी वे जैन धर्म में तीर्थंकरों से भी बढ़कर प्रतिष्ठित और पूज्य हुए। क्या अपने नाम बाहुबली के अनुरूप ही शारीरिक बल और परम पराक्रमशीलता के कारण ही वे प्रतिष्ठित और वंदनीय हुए? शायद नहीं। बाहुबली की प्रतिष्ठा का कारण वह बल था जो सामान्य जनों में ही नहीं, बड़े-बड़ों में भी दुर्लभ होता है।

तीर्थंकर ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र सम्राट भरत दिग्विजय के लिए निकले, लेकिन उनके अनुज युवराज बाहुबली ने उनका आधिपत्य स्वीकार करने से मना कर दिया। दोनों के बीच द्वंद्व हुआ और इसमें बाहुबली विजयी हुए। लेकिन बाहुबली की प्रतिष्ठा का कारण युद्ध में विजय नहीं है। युद्ध में पराजित होने पर भरत ने बाहुबली को पराजित करने के लिए अमोघ शस्त्र चक्ररत्न का वर्जित प्रयोग भी किया, लेकिन चक्ररत्न निष्फल होकर वापस लौट आया।

बाहुबली अपराजेय रहे, लेकिन अपने अग्रज भरत की साम्राज्य लिप्सा और विजय प्राप्त करने के लिए अपने ही अनुज पर चक्ररत्न के वर्जित प्रयोग को देखकर वे अत्यंत आहत हुए और उनमें इस असार संसार के प्रति विरक्ति का भाव उत्पन्न हो गया। उन्होंने राज्य त्याग करने का निर्णय ले लिया और अपने अग्रज सम्राट भरत को अपना राज्य सौंप कर वे धर्म की शरण में चले गए। बाहुबली के इस अत्यंत विनम्र व्यवहार और त्याग से विमुग्ध उनके भाई सम्राट भरत ने कहा कि तुम सचमुच बाहुबली हो अन्यथा कौन समर्थ व्यक्ति विजय के उपरांत त्याग और शांति स्वीकार करता है। ऋषभदेव के इस पुत्र ने विजय के उपरांत भी न केवल अपने अग्रज को क्षमा किया, बल्कि यह भी सुनिश्चित किया कि किसी भी प्रकार से उनका अपमान न हो। उलटे उन्होंने खुद ही अपने अग्रज से क्षमायाचना की। अपने इसी अद्वितीय त्याग के कारण बाहुबली तीर्थंकरों से भी अधिक पूजनीय हो गए। जो दूसरे को उसकी गलतियों के बावजूद क्षमा कर सकता है वही सच्चा वीर है। स्वतंत्रता, आत्मज्ञान, आत्मनियंत्रण, नम्रता और क्षमाशीलता ही वीरता के लक्षण हैं बाहुबल नहीं।

चौबीसवें तीर्थंकर भी महावीर स्वामी कहलाए। कहा जाता है कि उन्होंने एक भयानक सिंह को काबू में करने के बाद यह उपाधि प्राप्त की। कौन था वो सिंह? वह सिंह कोई जंगली

जानवर नहीं अपितु स्वयं मनुष्य के भीतर व्याप्त वासना रूपी व्याघ्र है। जिसने इस वासना रूपी व्याघ्र को जीत लिया, वह वीर नहीं महावीर है। बाह्य संसार पर तो हम किसी न किसी तरह नियंत्रण कर उसे अपने अधीन करने में सफल हो जाते हैं, लेकिन सबसे बड़ी सफलता और सबसे बड़ा पराक्रम है स्वयं पर विजय, अपनी वासनाओं और नकारात्मक भावनाओं पर नियंत्रण। नियंत्रण भी पर्याप्त नहीं, नियंत्रण के साथ-साथ जरूरी है सकारात्मकता का विकास।

दूसरों की विचारधारा को धैर्यपूर्वक सुनना, उसे महत्व देना भी वीरता है। आज हम बात-बात पर आपे से बाहर हो जाते हैं। सिर्फ अपना पक्ष देखते हैं। अपनी विचारधारा के पूर्वाग्रही है। जैन धर्म के स्याद्वाद का पालन भी वीरता का ही गुण है। जिसने दूसरे के विचारों को महत्व देना सीख लिया, उसने अहिंसा का पाठ भी सीख लिया। मैत्री का सबक भी याद कर लिया। इन सब गुणों से युक्त होने पर ही कोई वीर बनता है।

-प्रस्तुति : साध्वी पद्मश्री

मूल्यवान पत्थर

एक बार एक महात्मा अपने एक सेठ भक्त के आग्रह पर उसका खजाना देखने पहुंचे। हीरे, मोती, नीलम और पन्नों के संग्रह को देखकर महात्मा ने पूछा- इन पत्थरों से आपको कितनी आमदनी होती है? सेठ ने हैरान होकर कहा- आमदनी? इनकी सुरक्षा के लिए उलटे मुझे खर्च करना पड़ता है। पहरेदार रखने पड़ते हैं, क्योंकि ये पत्थर मूल्यवान हैं। कोई भी उन्हें चुराकर ले जा सकता हे। उसकी बात सुन महात्मा बोले- मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें इनसे भी अधिक मूल्यवान पत्थर दिखाऊंगा, जिसकी सुरक्षा नहीं करनी पड़ती बल्कि उससे आमदनी ही होती है। महात्मा सेठ को लेकर अपनी एक भक्त वृद्धा के यहां गए और उसके घर में रखी पत्थर की चक्की दिखाई। वह इससे दूसरों का अनाज पीसकर अपना और अपने बच्चों का पेट पालती थी।

महात्मा सेठ को समझाते हुए बोले, मेरी नजर में तुम्हारे उन पत्थरों की अपेक्षा यह पत्थर कहीं अधिक उपयोगी और मूलयवान है। तुम्हारे पत्थर किसी का पेट नहीं भरते, पर इस वृद्धा का पत्थर परिवार के सभी सदस्यों का पेट भरता है। सेठ को महात्मा की बात समझ आ गई।

लघु-कथा

आत्मविश्वास

एक शेर कई दिनों से भूखा-प्यासा शिकार की तलाश में भटक रहा था। दुर्भाग्य से एक लोमड़ी उसक मार्ग में आ गई। लोमड़ी शेर को देखकर जहां थी, वहीं खड़ी रह गई। उसके सामने तो शेर के रूप में जैसे साक्षात मौत खड़ी थी। भूखा शेर लोमड़ी पर झपटने वाला ही था कि वह गरज उठी- 'खबरदार! तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मुझ पर हमला करने की?'

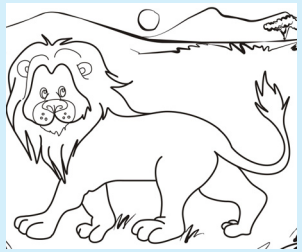

शेर अचानक रुक गया। आज पहली बार जंगल में उसकी पशु बिरादरी में से किसी ने उससे सवाल पूछने की हिम्मत की थी, वह भी फटकार की भाषा में। शेर ने पूछा- क्या मतलब है तुम्हारा?

शेर के सवाल से लोमड़ी का हौसला बढ़ा। लोमड़ी ने रोषपूर्वक कहा- 'मुझे ऊपर वाले ने जंगल का राजा बनाकर भेजा है और तुम मुझे मारने की सोच रहे हो?' लोमड़ी शेर की तरह दहाड़ नहीं सकती थी, लेकिन उसकी आवाज में आत्मविश्वास था, इसलिए वह असरदार थी।

शेर परेशान हो गया। यह क्या कह रही है? लोमड़ी का साहस और ज्यादा बढ़ गया। शेर धीमी आवाज में बोला- 'तुम्हारे पास क्या प्रमाण है कि ऊपर वाले ने तुम्हें जंगल का राजा बनाकर भेजा है?'

लोमड़ी ने पूरे आत्मविश्वास के साथ कहा- 'प्रमाण चाहते हो तो मेरे साथ चलो और अपनी आंखों से देख लो कि जंगल के दूसरे प्राणी मुझे देखकर कैसे भयभीत होते हैं।' शेर झट तैयार हो गया। वह देखना चाहता था कि जंगल में लोमड़ी की क्या हैसियत है?

अब लोमड़ी आगे-आगे चल रही थी और शेर उसके पीछे-पीछे। जो भी पशु-पक्षी सामने पड़ता भयभीत होकर अपना रास्ता बदल लेता या सहम कर दुबक जाता। सभी जानवर शेर से डर रहे थे और शेर समझ रहा था कि लोमड़ी से डर रहे हैं। शेर का आत्मविश्वास डगमगा गया और उसने समझ लिए कि लोमड़ी जो कह रही है, वह सच है शेर निराश होकर चला गया। चिंता करने से जीवन की समस्याएं नहीं सुलझती। आत्मविश्वास कायम रहे तो बड़ी से बड़ी समस्या सुलझ सकती है।

-रमेश चन्द्र जैन, मयूर विहार दिल्ली

कन्या को पूजने का पर्व है नवरात्र

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार नक्षत्रों की गणना अश्विन से आरंभ होती है। इस आधार पर आश्विन मास ज्योतिष वर्ष का प्रथम मास माना जाता है। दूसरी ओर सामान्य जन के लिए हिंदू कैलेंडर में संवत्सर या नए साल की शुरूआत चैत्र मास से होती है। इस प्रकार चैत्र नवरात्र की तरह आश्विन नवरात्र के साथ भी नवीन समय के शुभारंभ की भावना जुड़ी हुई है। चैत्र और आश्विन इन दोनों के नवरात्र ऋतुओं के संधिकाल में पड़ते हैं। संधिकाल के समय देवी की उपासना का विशेष महत्व है। जिस प्रकार देवी ने प्रकट होकर अनेक राक्षसों का वध किया, उसी प्रकार शक्ति की पूजा-उपासना से ऋतुओं के संधिकाल में होने वाले रोग-व्याधियों पर मनुष्य विजय प्राप्त करता है। यही नवरात्र का वैज्ञानिक महत्व है।

इन दोनों ऋतु संधिकाल के नौ-नौ दिनों (दोनों नवरात्र) की विशिष्ट पूजा के लिए महत्वपूर्ण माना गया है। जैसा कि हम जानते हैं, इस अवधि में हम खान-पान और आचार-व्यवहार में यथासंभव संयम और अनुशासन का पालन करते हैं। नवरात्र पर्व के साथ दुर्गावतरण की कथा तथा कन्या-पूजा का विधान जुड़ा हुआ है। यह उसका धार्मिक और सामाजिक पक्ष है। हमारे शास्त्रों में बालिकाओं के पूजन को बहुत महत्व दिया गया है। आश्चर्यजनक रूप से उनकी पूजा में जाति का कोई भेद नहीं रखा गया है और सभी कन्याओं को समान रूप से पूज्य मानने की सलाह दी गई है। शास्त्रों में ऐसा उल्लेख है कि इसमें जातिभेद करने से मनुष्य नरक से छुटकारा नहीं पाता और संशय में पड़ा हुआ व्यक्ति पातकी होता है। इसलिए भक्त को चाहिए कि वह देवी की आज्ञा समझ कर नवरात्रों में सभी बालिकाओं का पूजन करे, क्योंकि सभी बेटियां सर्वविद्या स्वरूपिणी होती है।

हमारे शास्त्र कहते हैं कि जिस जगह सभी कन्याओं की पूजा होती है, वह भूमि परम पावन है। उसके चारों ओर पांच कोस तक का क्षेत्र अत्यंत पवित्र हो जाता है। यदि आधुनिक संदर्भों में देखें तो इस पूजन का क्या अर्थ है? पूजने का अर्थ है- उन्हें मान-सम्मान देना, उनके महत्व और उनकी भूमिका को समझना। आखिर पूजा के कर्मकांड में भी हम उन्हें आदरपूर्वक बुलाते हैं, उनके पांव पखारते हैं, उन्हें अच्छा भोजन कराते हैं और वस्त्र आदि भेंट करते हैं।

हमारे एक धार्मिक ग्रंथ रुद्रयामलतंत्र के उत्तराखण्ड में कन्याओं को पूजने के लिए अलग-अलग आयु वर्ग में बांटा गया है और उन्हें विभिन्न देवियों के रूप में वर्णित किया गया है। उदाहरण के लिए एक वर्ष की आयु वाली बालिका संध्या, दो वर्ष वाली सरस्वती और तीन वर्ष वाली-त्रिधामूर्ति कही जाती है। इसी तरह चार वर्ष वाली कालिका और पांच वर्ष वाली सुभगा मानी जाती है। छह वर्ष में वह उमा हो जाती है। सात वर्ष की होने पर

वह मालिनी और आठ वर्ष पर कुब्जा कहलाती है। नौ वर्ष की कन्या कलसंदर्भा, दसवें वर्ष में अपराजिता और ग्यारहवें वर्ष में रुद्राणी है। बारह वर्ष की बालिका भैरवी और तेरह वर्ष की महालक्ष्मी होती है। चौदह वर्ष में उसे पीठनायिका, पंद्रहवें में क्षेत्रज्ञा और सोलहवें में उसे अंबिका की श्रेणी में रखा जाता है। एक अन्य ग्रंथ मंत्रमहोदधि के अठारहवें तरंग में वर्णन है कि यजमान को चाहिए कि वह नवरात्र में दस कन्याओं का पूजन करें। इनमें दो वर्ष की अवस्था से लेकर दस वर्ष तक की ही पूजन करना उत्तम है। जो दो वर्ष की उम्रवाली है वह कुमारी, तीन वर्ष की त्रिमूर्ति, चार वर्ष की कल्याणी, पांच वर्ष की रोहिणी, छह वर्ष की कालिका, सात साल की चंडिका, आठ वर्ष की शांभवी, नौ वर्ष की दुर्गा और दस वर्ष की कन्या सुभद्रा कही गई है। इस ग्रंथ में कहा गया है कि एक वर्ष की कन्या की पूजा से प्रसन्नता नहीं होगी। इसी प्रकार ग्यारह वर्ष से ऊपर वाली कन्याओं के लिए भी पूजा ग्रहण वर्जित कहा गया है।

शास्त्र कहते हैं कि जो कन्याओं की पूजा करता है, उसी के परिवार में देवी-देवता प्रसन्न होकर संतान के रूप में जन्म लेते हैं, फिर हम क्यों नवरात्रों में धार्मिक विधि-विधान से पूजा करते हैं और साल के बाकी दिन बालिका भ्रूण की हत्या करते हैं।

-प्रस्तुति : साध्वी वसुमती

आत्मा का भोजन

एक वकील ने गांधी जी से कहा, ' महात्मा जी, आप का बहुत सा समय प्रार्थना करने में बीत जाता है। अगर आपने यह समय भी देश सेवा में लगाया होता तो देश की सेवा और अधिक हो गई होती।' गांधी जी गंभीर हो गए और थोड़ी देर चुप रहे। फिर बोले 'वकील महोदय! आप भोजन करने में कितना समय लगाते हैं।' लगभग बीस-तीस मिनट' वकील बोले। 'भोजन करने में आपका बहुत समय बरबाद हो जाता है। अगर इतना समय आप मुकदमों की तैयारी में लगाते तो अभी तक आपने बहुत से मुकदमों की तैयारी कर ली होती'। 'मैं मुकदमों की तैयारी बिना भोजन कैसे कर सकता हूं? वकील ने कहा। वकील का उत्तर सुनकर गांधी जी ने मुस्करा कर कहा 'वकील साहब! जिस प्रकार आप बिना भोजन के मुकदमे की तैयारी नहीं कर सकते, उसी प्रकार मैं भी प्रार्थना के बिना देश सेवा नहीं कर सकता। प्रार्थना मेरी आत्मा का भोजन है और इससे मेरी आत्मा को शक्ति और प्रेरणा मिलती है। जैसे शरीर के लिए आहार आवश्यक है, उसी प्रकार ईश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना आत्मा के लिए आवश्यक आहार है।'

-प्रस्तुति : राजेन्द्र मेहरा

प्राकृतिक चिकित्सा

चिकित्सा जगत में भ्रम का स्पष्टीकरण

'संसार में भूख से पीड़ित होकर उतने व्यक्ति नहीं मरते, जितने अधिक भोजन के कुपरिणामों से।' **-महात्मा गाँधी**

'दवाओं से रोग अच्छा नहीं होता केवल दबता है रोगों को हमेशा प्रकृति अच्छा करती है।' **-प्रोफेसर जीसेफ स्मिथ, एम.डी.**

आज पूरे संसार में स्वास्थ्य की समस्या एक विकराल रूप लेकर सामने आया है व्यक्ति अपनी सोच के मुताबिक बड़ी उपलब्धियों को हासिल कर लेता है पर स्वास्थ्य की समस्या उसके सारे सुखों और शान्ति को छीनता नजर आता है। वर्तमान में उत्कृष्ट चिकित्सा प्राणाली एलोपैथी में रोगों पर काबू पाने के लिए नित्य नये शोध कार्य हो रहे हैं। और बीमारी को दूर करने के नुस्खे तैयार हो रहे हैं। पर कोई बीमारी जड़ से ठीक होने का नाम ही नहीं लेता। डॉक्टर और रोगी की सब मेहनत असफल नजर आती है। हर वर्ष रोग के नये-नये नाम आ रहे है। रोगीयों का औसत मृत्यु दर बढ़ रहा है। व्यक्ति दिन प्रतिदिन अपने आपको कमजोर पाता है, व्यक्ति की शारिरिक क्षमता घट रही है।

प्रकृति के अचूक नियमों को समझने पर रोग के कारण और निवारण का रहस्य समझ में आने लगता है प्रकृति की सारी व्यवस्था 'कार्य कारण के सिद्धान्त' पर काम करती है।

समझने पर मनुष्य जिस अज्ञानता के कारण बीमार हुआ है। स्वस्थ होने के लिए उससे बड़ी अज्ञानता (भ्रम) का बोझा ढ़ोये जा रहा है। नतीजा यह निकला है कि समय बीतने पर ठीक करने वाली प्राकृतिक जीवनी शक्ति क्षीण होती जाती है, और व्यक्ति असाध्य रोग की गिरफ्त में फस जाता है। परिणाम यह होता है कि, ठीक होने की आस में वह डॉक्टर और हॉस्पिटल बदलता है।

रोग का कारण कीटाणु नहीं

माडर्न चिकित्सा पद्धति के डॉक्टरों का मानना है कि किसी भी रोग का कारण शरीर में बाहर से कीटाणु, बैक्टिरिया वायरस का प्रवेश कर जाना होता है। और उसे ठीक करने के लिए इस वैक्टिरिया वायरस को नष्ट करने की एन्टिबायोटिक दवाएं देते हैं। फलतः रोगी ठीक होता है। लेकिन समय बीतने पर वह फिर बीमार पड़ता है यही बिमारी बड़ा रूप लेकर वापस आती है।

प्राकृतिक चिकित्सा का मानना है। कि रोग का कारण कीटाणु नहीं है बल्कि शरीर में एकत्रित विजातीय द्रव्य (टाक्सिन) जो कीटाणुओं के पनपने का कारण है कीटाणु वही पनप सकते हैं जहां उसे खाने के लिए कचरा, आहार, अनुकूल वातावरण मिलता है। अगर यह न मिले तो ये अन्दर जायेंगे लेकिन पनप ही पायेंगे। निर्मल शरीर में संसार के सारे रोगाणु एक साथ मिल कर के रोग उत्पन्न नहीं कर सकते। परन्तु जिस शरीर में कीटाणुओं के पोषण योग्य मल विद्यमान है उसमें रोगाणु अवश्य उत्पन्न होंगे तथा पनपेंगे। इस तरह हम देखते हैं कि कीटाणु रोग के कारण नहीं होते बल्कि शारीरिक टॉक्सीन ही कीटाणु के कारक हैं जिसे हम रोग कहते हैं।

जिस व्यक्ति को रोग के कारण डॉक्टरों ने मौत का फतवा दे दिया, जीवन जीने की ललक, जीवन में कुछ कर गुजरने की छटपटाहट ने अपने शरीर को ही प्रयोगशाला बना डाला, 20-20 दिनों तक उपवास किया, महीनों तक फलाहार और रसाहार, मिट्टी, पानी, धूप, हवा, आकाश का समुचित प्रयोग ने सारे रोगों को विनष्ट कर शरीर को नवीन बना दिया। ऐसे व्यक्ति ने अपने स्वास्थ को उन्नत किया। और अपना जीवन प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति समर्पित किया। और दृढ़ विश्वास से लिखा-

'जिसे हवा, पानी, अन्न का परिणाम समझ में आ गया वह अपने शरीर को स्वस्थ रख सकता है। उतना डॉक्टर भलीभांति नहीं रख सकता।' **-महात्मा गाँधी**

'प्रकृति जिसे आरोग्य नहीं कर सकती उसे कोई भी आरोग्य नहीं कर सकता।'

-विलियम ओस्कर

'प्रकृति की ओर लौटो।' **-एडल्फ जुस्ट**

डॉ. प्रभु एस. पाल, नेचुरोपैथी और योग विशेषज्ञ
सेवाधाम नेचुरोपैथी हॉस्पीटल, नई दिल्ली

दंत रक्षा

गरमा गर्म जो दूध पिए, अथवा भोजन खाय।
वृद्धावस्था के प्रथम बत्तीसी झर जाय।। 1

गर्म दूध भोजन करो, राखन चाहो दन्त।
तो शीतल जल पीजिए, एक घड़ी के अन्त।। 2

वेजिटेबल खाओ, हेल्दी रहो

लोग हेल्दी होने के लिए पता नहीं क्या-क्या खाते हैं, जबकि सच्चाई यह है कि अगर सही तरीके से हरी सब्जियां भी खा ली जाएं, तो इंसान पूरी तरह हेल्दी रह सकता है। मटर, गाजर और पालक जैसी सब्जियां भी हमारी बॉडी के लिए काफी हेल्दी होती है।

कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो कितना भी खा लें लेकिन उनकी बॉडी पर उसका जरा भी असर नजर नहीं आता। वहीं ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है, जो बहुत कम खाकर भी हेल्दी रहते हैं। दरअसल, यह सब इस चीज पर डिपेंड करता है कि आप क्या खाते हैं। दरअसल, हम लोगों को इस बात की जानकारी नहीं होती कि हमारी बॉडी के लिए क्या चीज फायदेमंद रहेगी और क्या नुकसानदायक। इसी जानकारी के अभाव में कई बार हम कुछ भी खा लेते हैं। आइए आपको देते हैं कुछ ऐसी ही चीजों की जानकारी, जो हेल्थ के लिए बेहद फायदेमंद होती है।

मटर

मटर न सिर्फ किसी सब्जी का जायका बढ़ा देती है, बल्कि यह एक ऐसी सब्जी है, जिसमें प्रोटीन की मात्रा बहुत ज्यादा होती है। आपको बता दें कि ऐसी बहुत कम सब्जियां हैं, जिनमें इतना ज्यादा प्रोटीन पाया जाता है। इसके आलावा, मिल्क, टोफू, योगहर्ट और सोया प्रोटीन के रिच सोर्स हैं। खुद को फिट रखने में इन चीजों का सेवन बेहद फायदेमंद होता है।

गाजर

गाजर विटामिंस का अच्छा सोर्स हैं। अगर आपको यह पसंद नहीं है, तो दूसरी कई और सब्जियां है, जिनमें यह तत्व खूब पाया जाता है। इसकी जगह आप मेथी के ऑप्शन पर जा सकते हैं। कॉलेस्ट्रॉल को कम करने में मेथी का उपयोग फायदेमंद होता है। मेथी का इस्तेमाल डाइजेशन, पेट का इंफेक्शन, माउथ अल्सर और डायबिटीज आदि में बेहद फायदेमंद होता है। खासतौर पर प्रेग्नेंसी के दौरान इसका सेवन बच्चे और मां दोनों के लिए बेहद फायदेमंद है।

पालक

पालक फाइबर पोटैशियम का सबसे अच्छा सोर्स है। इसकी सबसे बड़ी खासियत यह है

कि यह बेहद कम दामों पर उपलब्ध है। हालांकि इसको रिप्लेस करना बेहद मुश्किल है, लेकिन आप चाहे तो इसकी जगह फूल गोभी, लोकी और परवल के ऑप्शन पर जा सकते हैं। दसअसल, पालक की तरह ही इनमें भी पर्याप्त फाइबर्स पाए जाते हैं। पोटैशियम पाने के लिए आप अपने खाने में टेमरिंड भी मिला सकते हैं। टेमरिड सस्ता और हेल्दी है, जबकि लेमन आपको महंगा पड़ेगा।

नीबू

इसमें विटामिन सी भरपूर मात्रा में होता है। नीबू के नियमित इस्तेमाल से स्किन और बाल ग्लो करते हैं। इसमें आयरन की मात्रा भी काफी होती है। हां, अगर आप नीबू नहीं लेना चाहते तो आप आंवले से भी इतनी ही मात्रा में विटामिन सी पा सकते हैं। आंवला नीबू से सस्ता होता है, लेकिन विटामिन सी से भरपूर होता है। इसमें आयरन और एंटी आंस्डिेंट बेहद मात्रा में होते हैं, जो उम्र बढने वाले रेडिकल्स से आपको बचाए रखते हैं। ये नेचरल कूलेंट का काम करते हैं, इसलिए स्किन को भी हानिकारक टॉन्सिन से बचाते हैं। अगर किसी डिशेज में आप लेमन जूस डालना है, तो उसके साथ थोड़ा वाइट विनेगर जरूर डालें।

-प्रस्तुति : अरूण तिवारी

चुटकुले

1. पप्पू को फॉर्म भरना था। उसने अपने पिता से पूछा : डैड, इसमें मैं 'मदर टंग' के कॉलम में क्या लिखू?
डैड : बेटा, लिखो बेहद लंबी।

2. जज : तुम पिछले एक हफ्ते में सात चोरियां कर चुके हो...।
चोर : वो क्या है ना जज साहब, मैं बचपन से ही बहुत मेहनती हूं।

3. एक आदमी ज्योतिषी से : मेरी शादी क्यों नहीं हो रही है?
ज्योतिषी : क्योंकि तुम्हारी कुंडली में सुख ही सुख लिखे है।

4. दो दोस्त अरसे बाद मिले और कॉलेज के दिनों को याद करने लगे।
पहला : याद है, हम दोनों एक ही लड़की को प्यार करते थे। मेरी किस्मत तेज निकली, उसने मुझे चुन लिया। आज मैं जो कुछ भी हूं उसी की वजह से हूं।
दूसरा : क्या हो तुम आज?
पहला : दीवालिया।

मासिक राशि भविष्यफल-मई 2011

○ डॉ.एन.पी मित्तल, पलवल

मेष- मेष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अच्छा लाभ प्रद रहेगा। व्यय भार भी रहेगा किन्तु अधिकतर भूमि भवन के सौदे में खर्च होगा। इस कार्य के लिये यह शुभ है। कोई नई योजना भी इन जातकों के विचारधीन हो सकती है। किसी प्रतियोगिता में सफलता मिल सकती। सेहत के प्रति मासान्त में अधिक सचेत रहना होगा।

वृष-वृष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अधिक सुदृढ़ता लिये हुए है। कुछ जातकों का पुराना दिया हुआ उधार भी पट सकता है। सरकारी कर्मचारियों को सफलता मिले। कानून संबंधी कार्यों में भी विजय के आसार हैं। परिवारजनों का तथा मित्रों का सहयोग मिलेगा। समाज में मान सम्मान बना रहेगा। आत्मबल की शक्ति से कार्यों को निपटाने में सफल होंगे।

मिथुन-मिथुन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कम आमदमी और अधिक खर्च वाला कहा जाएगा। काफी मेहनत और भाग दौड़ करनी पड़ेगी तब जाकर कहीं आंशिक सफलता मिलेगी। किन्हीं जातकों को लेने देने के कार्य में लाभदायक स्थिति रह सकती है। सामान्य रूप से समाज में प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

कर्क-कर्क राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह आमदनी खर्चा बराबर की स्थिति लिये हुए होगा। माह के उत्तरार्ध में बिना लक्ष्य के इधर उधर घूमना होगा तथा कठिन परिश्रम करना पड़ेगा। स्वभाव में चिड़चिड़ापन व मानसिक अशांति बनी रहेगी। बात-बात पर क्रोध आयेगा जिसे काबू में रखना ही श्रेयस्कर रहेगा।

सिंह-सिंह राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कम आमदनी तथा अधिक खर्च वाला है। किन्हीं नौकरी पेशा जातकों का तबादला हो सकता है। परिवार में मन मुटाव रहने के संकेत है। समाज में मान सम्मान बना रहेगा।

कन्या-कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह उत्तम आमदनी वाला तथा कम व्यय वाला रहेगा। अधिक परिश्रम के कारण थकान हो सकती है। नौकरी पेशाजातकों को कुछ परेशानी आ सकती है जो बाद में हल हो जाएगी। कुछ जातकों के मुकदमें आदि भी सुलझने की ओर अग्रसर होंगे। संतान की ओर से कोई शुभ सूचना मिल सकती है। सामान्य रूप से समाज में प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

तुला-तुला राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह आय भी अच्छी करायेगा और व्यय भी विशेष करना पड़ेगा। अच्छा फल दायक नहीं है। किन्हीं नौकरी पेशा जातकों को तरक्की हो सकती है। नये लेन-देन का कार्य करते हैं उनमें भी प्रगति के संकेत हैं। नये व्यक्तियों से सम्पर्क बढ़ेंगें। आत्म बल की बढ़ोत्तरी होगी।

वृश्चिक-वृश्चिक राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अच्छा है पर तत्सबंधित यात्राओं में कष्ट हो सकता है। कोई दुर्घटना भी हो सकती है। स्वास्थ्य की दृष्टि से इन जातकों को पेट संबंधी रोग हो सकता है तथा गुप्त शत्रुओं के कारण मन में भय बना रहेगा। परमात्मा का ध्यान करें। सामान्य रूप से समाज में प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

धनु-धनु राशि के जातकों के लिये आय के अच्छे होने के आसार है तथा खर्चा अनुपात में कम ही होगा। मनः स्थिति कानूनी कार्यों में भी सफलता मिलेगी। व्यवसाय में परिर्वतन या किसी नये व्यवसाय के और शुरू करने का मन बन सकता हैं स्वास्थ्य कुल मिलाकर अच्छा रहेगा। समाज में मान सम्मान बना रहेगा।

मकर-मकर राशि के जातकों के लिये यह माह श्रेष्ठ फलदायक है। आखिरी सप्ताह छोड़ कर कुलमिलाकर मास शुभ ही है। नौकरी पेशा जातक अपने अधिकारियों से न बिगाड़े अन्यथा नुकसान हो सकता है। परिवार में सामन्जस्य बनाए रखना होगा जिसके लिये परिश्रम करना पड़ेगा। ज्यादा नोक झोंक से बचें। पत्नी पर कोई कष्ट आ सकता है। ध्यान दें। समाज में मान सम्मान बना रहेगा।

कुंभ-कुंभ राशि के जातकों के लिये यह माह मिला जुला फल व्यापार-व्यसाय की दृष्टि से देने वाला है। पूर्वार्ध खराब है, उत्तरार्ध अच्छा है। भूमि भवन के सौदे का योग बन सकता है जिसमें पैसा तो खर्च होगा किन्तु बात सिरे नहीं चढ़ेगी। नौकरी पेशा जातकों को भी अच्छी दौड़ धूप करनी पड़ेगी। जिससे मानसिक चिन्ता बनी रहेगी। समाज में मान सम्मान बना रहेगा।

मीन-मीन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह आमदनी सीमित तथा खर्चा अधिक कराने वाला है। भूमि भवन के प्रसंगों में अच्छा पैसा खर्च होगा। परिवारजनों में चले आ रहे गिले शिकवे दूर होंगे। अपने क्रोध पर काबू रखें। अर्थोपार्जन में रूकावटें आने पर विचलित न हों। दाम्पत्य जीवन सामान्य रहेगा। सामान्य रूप से समाज में प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

-इति शुभम्

शिक्षा-सेवा की प्रेरणा के बीच मना महावीर-जयंती-समारोह

पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी तथा पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी के सान्निध्य में जैन आश्रम, नई दिल्ली में भगवान महावीर की जन्म-जयंती के उपलक्ष्य में तीन अप्रेल, रविवार 2011 को शिक्षा और सेवा के वातावरण में एक विशेष आयोजन रहा। इस प्रसंग पर पूज्यवर ने कहा- महावीर-जयंती हर वर्ष आती है। हम हर्ष और उल्लास से उसे मनाते भी हैं। लेकिन हम पूजाओं, प्रवचनों तथा शोभा-यात्राओं तक ही अपने को सीमित कर लेते हैं। जरूरी यह है इस पावन जयंती के दिन कोई विशेष संकल्प और कोई सेवा-कार्य द्वारा उस वीतराग महाप्रभु को अपने जीवन से जोड़ें, जिसकी सुगन्ध से यह जीवन चमन महक उठे-

ऐसे आज मनाएं जन्म-जयंती का दिन
महक उठे जिसकी खुशबू से जीवन-उपवन।

इस अवसर पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी ने भगवान महावीर के जीवन पर विशेष प्रकाश डाला। सौरभ मुनि तथा श्रीमती मंजुबाई जैन ने अपने मधुर भजन प्रस्तुत किये। गजल गायक श्री बलबिन्दर भारती ने पूज्य गुरूदेव की एक गजल को गिटार के मधुर तारों पर प्रस्तुत किया।

समारोह का दूसरा पार्ट था मानव मंदिर गुरूकुल के उन बच्चों को पुरस्कृत करना, जिन्होंने शिक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। साध्वी समताश्री जी ने बताया- इस वर्ष मानव मंदिर गुरूकुल के बच्चों का औसत परीक्षा परिणाम 91 प्रतिशत रहा है। बालक अशोक, यश और पिंकी ने विद्यालय का Best Student Award जीता है। कुमार गगन द्वारा निर्मित साइंस मॉडल The Artificial Rain ने अखिल भारतीय प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया है। भारत का सर्वोच्च विज्ञान-संस्थान इसरो के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक श्री कस्तूरीरंगन दिल्ली में जिन प्रतिभाशाली छात्रों से मिले, उसमें कुमार गगन भी शामिल था। गुरूकुल के बच्चों की इन विशिष्ट उपलब्धियों की जानकारी पाकर उपस्थित जन-समुदाय ने देर तक करतल-ध्वनि से अपना हर्ष प्रकट किया। समाज-सेवी श्रीमती अरूणा सुराणा तथा श्रीमती अरूणा मेहता ने बच्चों को पुरस्कार प्रदान किये। सरस्वती बाल मंदिर विद्यालय के प्रिंसिपल श्री चन्दजी अग्रवाल ने इस प्रसंग पर कहा- मानव मंदिर गुरुकुल के बच्चे हमारे विद्यालय की शान है। न केवल शिक्षा बल्कि उन्नत संस्कार तथा अनुशासन की दृष्टि से भी इन बच्चों की अलग पहचान है।

इस प्रसंग पर आवश्यक सुविधा-युक्त नव-निर्मित किचन तथा डाइनिंग हाल का

लोकार्पण श्रीमती मंजुबाई जैन, श्रीमती अरूणा सुराणा तथा श्रीमती अरूणा मेहता द्वारा किया गया। आज का मधुर भंडारा श्री धर्मपाल जी कमलेश गोयल की ओर से रहा।

हिसार में अष्ट-दिवसीय प्रभावनापूर्ण प्रवास

10 अपेल, रविवार को पूज्यवर के हिसार-पदार्पण पर मानव-मंदिर भवन में स्थानीय समाज द्वारा भाव भरा स्वागत किया गया। स्वागत में साध्वी चांदकुमारी जी, श्रीमती संतोष रानी, डॉ. नवल आदि ने अपने विचार-सुमन अर्पित किये। साहित्य चेता श्री जयकुमार जैन ने संयोजन किया। पूज्यवर ने अपने प्रवचन में कहा- संत-समागम की महिमा इसीलिए है कि संत-आगमन से मन में पवित्र एवं शुभ परिणामों का संचार होता है। आपने कहा- हर वर्ष हमारा आगमन होली-पर्व पर होता है। किन्तु इस वर्ष श्री राम-नवमी तथा श्री महावीर-जयंती का आयोजन और अधिक प्रेरणादायी रहेगा। उपस्थित दिगम्बर जैन समाज के प्रमुख व्यक्तियों के निवेदन पर महावीर-जयंती पर दिगम्बर जैन मंदिर में पूज्यवर ने विशेष प्रवचन की स्वीकृति प्रदान की।

श्री राम-नवमी पर अपने विशेष प्रवचन में पूज्य गुरूदेव ने कहा- श्री राम का जीवन मर्यादा की प्रेरणा तो देता ही है, यह अपने में मंत्राक्षर भी है। इसमें सूर्य और चंद्र की संयुति है जिसके अभ्यास से ज्योति स्वयं प्रकट होती है।

दिगम्बर जैन समाज, हिसार हर वर्ष बड़ी धूमधाम से महावीर-जयंती समारोह मनाता है। सबेरे विशेष पूजाएं तथा भजन, फिर पूरे शहर में रथ-यात्रा। विशेष यह है कि इन वर्षों में प्रभु-रथ को भक्त स्वयं खींचते हैं। इस बार पूजाओं, ध्वजारोहण के पश्चात् तथा रथ-यात्रा से पूर्व पूज्य गुरूदेव का प्रेरणादायी प्रवचन रहा। पूज्यवर ने कहा- ये पावन क्षण आत्म-दर्शन का दीया जलाने के लिए हैं। इन क्षणों को प्रदर्शन दिखावे में नहीं खो देना है। सौरभ मुनि के मधुर भजन भी हुए। समाज में प्रवचन भजनों की अच्छी गूंज रही। प्रेममय वातावरण का विस्तार हुआ। उल्लेखनीय है कि सन् 1984-85 से लेकर आज तक दिगम्बर जैन समाज पूज्य गुरूदेव के प्रति पूरे श्रद्धा स्नेह से जुड़ा हुआ है।

श्री हंस एवं श्री भारतीय का सम्मान

17 अप्रेल रविवार को मानव मंदिर हिसार द्वारा आयोजित कवि-गोष्ठी में राज्य कवि श्री उदयभानु हंस को उनके उत्कृष्ट साहित्यिक योगदान के लिए तथा वरिष्ठ पत्रकार श्री कमलेश भारतीय को उत्कृष्ट पत्रकारिता के लिए सम्मानित किया गया। इस अवसर पर बोलते हुए पूज्य गुरूदेव ने कहा- कविता जीवन का मार्ग-दर्शन तभी करती है जब वह

जीवन से जुड़ी हुई हो। इससे पूर्व पूज्य गुरूदेव तथा श्री उदयभानु हंस ने श्री सुरेन्द्र छिंदा तथा सुमन जैन द्वारा कन्या-भ्रूण-हत्या से होने वाले सामाजिक असंतुलन के प्रति सचेत करनेवाली प्रदर्शनी का अवलोकन किया। मंच का संचालन श्री कमलेश भारतीय ने किया। हिसार तथा चंडीगढ से प्रकाशित होने वाले सभी हिन्दी अखवारों ने इस कार्यक्रम को सचित्र प्रमुखता से प्रकाशित किया। कुमारी विभा ने सरस सरस्वती-वंदना पस्तुत की।

दिनांक 18 अप्रेल को पूज्यवर पंचकूला पधारे, जहां श्री सीताराम बंसल के आवास पर रात्रिकालीन प्रवचन में समाज के विशिष्ट लोगों की अच्छी उपस्थिति रही। 19 अप्रेल को प्रातः श्री के.के. बंसल की कोठी पर पूज्यवर का पदार्पण हुआ। **साहित्य-संगम जीरकपुर द्वारा सायं सुप्रसिद्ध कवि-कथाकार प्रो. मानव के आवास पर- साहित्य-संगम की शाम आचार्य रूपचन्द्र के नाम- साहित्य-गोष्ठी हुई।** वरिष्ठ पत्रकार श्री गोविन्द ठुकराल ने अध्यक्षता करते हुए आचार्यश्री की काव्य प्रतिभा का लोहा मानते हुए उनके आधुनिकतम व्यवहार और विचारों की सराहना की। पुस्तक, गजलें और अपनी कविताओं की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति करते हुए आचार्य रूपचन्द्र ने अपने वक्तव्य में कहा कि वह जैन परम्परा का खंडन या विघटन नहीं, इसका विस्तार करने के पक्षधर हैं। भ्रष्टाचार पर आपने कहा-

इस देश के मंदिर में कहां दरार नहीं है
सही-सलामत एक भी दरों-दीवार नहीं है
मत पूछो किसने लूटा है इस गुलशन को
यह पूछो इस लूट में कौन हिस्सेदार नहीं है

आज की समसामयिक स्थितियों पर व्यंग्य करते हुए आपने एक घंटे तक रसमय काव्य-पाठ किया। डॉ. रमेश कुंतल मेघ, डॉ. राधेश्याम शर्मा, डॉ. ज्ञानचंद शर्मा और अन्य कई प्रबुद्ध विद्वानों ने आचार्य रूपचन्द्र के काव्य-पाठ पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्हें आज का 'कबीर' बताया। सहयोगी मुनिश्री सौरभ के संगीतमय गायन, उनकी गजलों की प्रस्तुति ने भी माहौल में ताजगी भर दी। सर्वश्री विष्णु सक्सेना, नवीन नीर, चंद्र भार्गव स्नेहिल, फूलचंद मानव, विकास कविराय, आदि कवियों ने भी काव्य पाठ किया। मुकुल और मंजुल ने संगीतात्मक स्तरों में गुरु वंदना प्रस्तुत की। संगम संरक्षक डॉ. ज्ञान ने आचार्यश्री और कवियों का आभार व्यक्त किया। इस साहित्य-गोष्ठी की भी चंडीगढ-पंजाब के अखबारों में व्यापक चर्चा रही।

पूज्य गुरूदेव 20 अप्रेल को चंडीगढ में श्रीमती दर्शना बाई अग्रवाल के आवास पर पधारे। 21 अप्रेल को मंडी गोविन्दगढ में श्री हरवंशलाल प्रदीप बंसल तथा श्री रघुवीरजी विजया के आवास पर मंत्र-पाठ तथा भजन हुए। इस प्रकार चंडीगढ-पंजाब की संक्षिप्त यात्रा करके 23 अप्रेल को पुनः दिल्ली पधार गए।

सरलमना साध्वीश्री मंजुश्री जी हरियाणा-पंजाब में

सरलमना साध्वी मंजुश्रीजी अपनी सहयोगी साध्वियों के साथ अभी मानव मंदिर हिसार में विराजमान है। कुछ दिनों पश्चात् आप सुनाम, पंजाब पधार जाएंगी। पूज्य गुरूदेव की हिसार-सुनाम यात्राओं में आपके प्रेम भरे जन-संपर्क से अच्छी भूमिका तैयार हो जाती है। वृद्धावस्था में भी आपका हौसला औरों के लिए प्रेरणा बन जाता है।

संवेदना-स्मृति

हिसार प्रवासी श्री हुक्मीचन्द जी जैन का अभी पिछले हफ्ते स्वर्गवास हो गया। वह काफी धार्मिक विचारों वाले व्यक्ति थे। और काफी लम्बे समय से बीमार चल रहे थे। उनकी धर्मपत्नी जिनका एक साल पहले ही स्वर्गवास हो गया। उनका घर एकदम मानव मंदिर के सामने ही है। उनकी सेवा भावना भी साधु-सतियों के लिए बहुत थी। और ऐसे ही संस्कार उन्होंने अपने बच्चों में दिए। उनके बड़े बेटे रविन्द्र कुमार और छोटे बेटे अजय बाबू ने भी उनकी काफी सेवा की थी। गुरुदेव जी के प्रति वह खुद और पूरा परिवार काफी श्रद्धाशील है। और समय-समय पर यह परिवार सेवा भी करता रहता है।

गुरुदेव जी संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी महाराज ने भी पूरे परिवार को सांत्वना देते हुए फरमाया कि अब पूरे परिवार को हिम्मत रखनी होगी।

साध्वी मंजुश्री जी महाराज, चाँद कुमारी जी महाराज ने भी पूरे परिवार को हिम्मत रखने और सेवा करते रहने की प्ररेणा दी है।

दिवंगत आत्मा के प्रति जैन आश्रम परिवार तथा रूपरेखा पत्रिका परिवार की भाव विनम्र श्रद्धांजलि।

-साहित्य-संगम जीरकपुर द्वारा आयोजित कवि-गोष्ठी में पूज्य आचार्यश्री के साथ सौरभ मुनि, डॉ. ज्ञान, प्रो. मानव।

-मानव मंदिर हिसार द्वारा सम्मानित श्री उदयभानु हंस, श्री कमलेश भारतीय पूज्यवर के साथ। अन्य हैं सौरभ मुनि जयकुमार जैन, शीतलप्रसाद जैन, केशोराम दौलतपुरिया आदि।

-पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महाराज के मंगल पाठ को ध्यानमग्न अवस्था में श्रवण करते हुए समागत भक्तजन।

-पूज्यवर के साथ सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री अवधनारायण चित्राजी मुद्गल, प्रो. फूलचन्द मानव, डॉ. विनीता गुप्ता एवं सौरभ मुनि।